The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 3 | March 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

भारत-अमेरिका व्यापार समझौता 2026 : भारतीय आर्थिक शक्ति और रणनीतिक स्वायत्तता पर प्रभाव

विवेक सिंह

रिसर्च स्कॉलर, डिफेंस एंड स्ट्रेटेजिक स्टडीज विभाग, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

प्रो0 धीरेंद्र द्विवेदी

(सुपरवाइजर / रिसर्च गाइड), कन्वीनर, डिफेंस एंड स्ट्रेटेजिक स्टडीज विभाग, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.19542813

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 28-03-2026

Published: 10-04-2026

Keywords:

भारत–अमेरिका संबंध , द्विपक्षीय संबंध , शीत युद्ध , गुटनिरपेक्षता , आर्थिक उदारीकरण , रणनीतिक साझेदारी , वैश्विक राजनीति , इंडो-पैसिफिक क्षेत्र , व्यापार और निवेश , विदेश नीति ।

ABSTRACT

यह लेख भारत और अमेरिका के द्विपक्षीय संबंधों के ऐतिहासिक विकास का विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसमें 1947 से लेकर वर्तमान समय तक के विभिन्न चरणों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि कैसे प्रारंभिक वैचारिक मतभेदों, शीत युद्ध की राजनीति और भू-राजनीतिक परिस्थितियों के बावजूद दोनों देशों के संबंध समय के साथ विकसित होकर एक मजबूत रणनीतिक साझेदारी में परिवर्तित हुए। स्वतंत्रता के बाद भारत की गुटनिरपेक्ष नीति और अमेरिका की शीत युद्ध की रणनीति के कारण दोनों देशों के बीच सीमित सहयोग रहा, जबकि 1960 से 1990 के दशक के दौरान पाकिस्तान और सोवियत संघ के संदर्भ में उत्पन्न परिस्थितियों ने संबंधों में तनाव को बढ़ाया। 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद भारत और अमेरिका के बीच व्यापार और निवेश में वृद्धि हुई, जिससे संबंधों में सकारात्मक बदलाव आया। 21वीं सदी में विशेष रूप से 2005 के नागरिक परमाणु समझौते के बाद दोनों देशों के संबंधों में नई ऊर्जा आई और यह संबंध रक्षा, व्यापार, ऊर्जा, और तकनीकी सहयोग के क्षेत्रों में विस्तृत हुए। वर्तमान समय में भारत–अमेरिका संबंध "व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी" के रूप में विकसित हो चुके हैं, जो इंडो-पैसिफिक क्षेत्र, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला और आर्थिक सहयोग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अंततः, यह अध्ययन निष्कर्ष निकालता है कि भारत–अमेरिका संबंधों का विकास ऐतिहासिक, आर्थिक और रणनीतिक कारकों के जटिल अंतःक्रिया का परिणाम है। भविष्य में यह संबंध न केवल द्विपक्षीय हितों को सुदृढ़ करेंगे, बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन और क्षेत्रीय स्थिरता को भी प्रभावित करेंगे।

1. परिचय

15 अगस्त 1947 में मिली आजादी के बाद भारत अपनी आंतरिक राजनीति और विभाजन की विभीषिका से संघर्ष कर रहा था। स्वतंत्रता के बाद 1947 में अमेरिका ने भारत को शीघ्र मान्यता दी। यह वह समय था जब सम्पूर्ण विश्व द्वितीय विश्व युद्ध के परिणाम से उबरने की कोशिश कर रहा था तथा द्वि ध्रुवीयता की ओर उन्मुख हो रहा था - "पूंजीवादी एवं साम्यवादी"। पूंजीवादी गुट अमेरिका के प्रभाव में थे तथा साम्यवादी देश सोवियत संघ (रूस) के प्रभाव में थे। इन दोनों गुटों में होड़ थी कि कितने ज़्यादा से ज़्यादा देश इनके खेमे में शामिल हो जाएं। दोनों गुटों के मध्य जो शीत युद्ध चल रहा था उसमें पूंजीवादी गुट का नेतृत्व अमेरिका कर रहा था । भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति और सोवियत संघ की ओर झुकाव के कारण अमेरिका से व्यापारिक संबंध सीमित थे। इसके बावजूद 1950 और 60 के दशक में जब भारत खाद्यान्न संकट से जूझ रहा था, अमेरिका ने भारत की खाद्यान्न सहायता (Public Law 480) एवं आर्थिक सहायता की थी। भारत की साम्यवादी आर्थिक नीतियों और उच्च टैरिफ के कारण द्विपक्षीय व्यापार की गति धीमी रही। शीतयुद्ध के दौर (1960-90) में भारत - अमेरिका संबंधों में तनाव रहा । अमेरिका ने सैन्य और आर्थिक रूप से पाकिस्तान का समर्थन किया, भारत - पाकिस्तान के मध्य हुए युद्धों में अमेरिका का झुकाव पाकिस्तान की ओर था। भारत ने सोवियत संघ के साथ 1971 में "मैत्री संधि" की जिससे भारत-अमेरिका के बीच दूरी बढ़ी, इसमें और बल तब मिला जब भारत ने अपना पहला परमाणु परीक्षण 'स्माइलिंग बुद्धा' (1974) में कर लिया, इसके बाद अमेरिका ने भारत पर प्रतिबंध लगाए । 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद भारत का बाजार अमेरिका के लिए खुल गए जिससे भारत अमेरिका संबंध सुधरने लगे तथा व्यापार और निवेश में वृद्धि हुई। हालांकि 1998 में भारत के दूसरे परमाणु परीक्षण 'पोखरण II' के बाद अमेरिका ने भारत पर पुनः प्रतिबंध लगाए , लेकिन बाद में इन्हें हटा लिया गया। 2000 में अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की भारत यात्रा से द्विपक्षीय संबंधों में नया मोड़ आया। 2005 के नागरिक परमाणु सम बीझौते ने अविश्वास को खत्म किया और उच्च तकनीक (High Tech) व्यापार के द्वार खुले। IT सेवाओं और आउटसोर्सिंग के कारण भारत का सेवा निर्यात तेजी से बढ़ा। 2010 के बाद की अवधि में भारत-अमेरिका संबंध 'रणनीतिक साझेदारी' से बढ़कर 'व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी' के रूप में सामने आए।रक्षा, व्यापार, ऊर्जा और तकनीक के क्षेत्र में दोनों देशों के मध्य सहयोग बढ़ा |

2019 में ट्रंप प्रशासन ने भारत को 'प्राथमिकता वाले देशों "(GSP-Generalised System of Preferences) की सूची से हटा दिया, जिससे भारत के $5.6 बिलियन के निर्यात पर असर पड़ा। इसी दौरान तत्कालीन राष्ट्रपति ट्रंप ने 'Section 232' के तहत राष्ट्रीय सुरक्षा का हवाला देते हुए भारतीय स्टील पर 25% और एल्यूमीनियम पर 10% का आयात शुल्क लगा दिया। इसके जवाब में भारत ने जून 2019 में 28 अमेरिकी उत्पादों (जैसे बादाम, अखरोट और दालों) पर जवाबी टैरिफ बढ़ा दिए थे। प्रधानमंत्री मोदी की 2023 की अमेरिका यात्रा के दौरान, दोनों देशों के प्रमुख व्यापारिक विवादों को WTO में समाप्त करने और जवाबी शुल्कों को हटाने पर सहमति व्यक्त की थी | 2023 में iCET (इनिशिएटिव ऑन क्रिटिकल एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉजी) पहल के माध्यम से रक्षा, अंतरिक्ष और सेमीकंडक्टर क्षेत्र में ऐतिहासिक सहयोग शुरू हुआ |

विगत वर्ष में ट्रंप प्रशासन के पुनः सत्ता में आने के बाद से भारत - अमेरिका के मध्य वैचारिक एवं व्यापारिक तनातनी देखने को मिल रही थी जिसमें पहलगाम हमले के बाद पाकिस्तान का साथ हो या रूसी तेल के खरीद पर भारत के ऊपर 50% का टैरिफ ।

अमेरिका ने भारत के ऊपर भारी मात्रा में रूसी तेल खरीद के लिए 50% का दंडात्मक शुल्क' लगाए, जिससे व्यापारिक संबंध तनावपूर्ण हो गए | अमेरिका के बाजार में सितंबर 2025 से भारतीय निर्यात पर 50% का अतिरिक्त शुल्क लगने लगा था | अमेरिका भारत से ब्राज़ील के बाद सबसे ज्यादा शुल्क वसूल कर रहा था | इस चुनौती ने भारतीय निर्यातकों को वैकल्पिक बाजार तलाशने के लिए मजबूर किया और इस काम में सरकार ने पूरा साथ दिया | 200 देशों के वाणिज्यिक दूतावास के साथ संपर्क कर उन देशों में भारतीय वस्तुओं को प्रोत्साहित करने के लिए कहा गया | अगस्त के बाद दर्जन भर से अधिक नये देश व उत्पाद निर्यात के लिए जोड़े गये | जॉर्डन, मिस्र, ओमान, इजरायल,सूडान जैसे देशों में भारत का निर्यात बढ़ने लगा |

2. व्यापार समझौते के कारण और आवश्यकता

30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था वाला अमेरिका दुनिया का सबसे बड़ा खरीददार देश है | भारत ने पिछले वित्त वर्ष 2024-25 में सबसे अधिक अमेरिका को 86 अरब डॉलर का निर्यात किया था | अमेरिका से 40 अरब डॉलर का आयात किया गया था | इसलिए अमेरिका का बाजार भारत के लिए काफी अहम है | अमेरिका की बड़ी कंपनियाँ जिन देशों में श्रम लागत कम होती है, वहाँ मैन्युफैक्चरिंग करना पसंद करती हैं , और फिर उस सामान को अमेरिका व अन्य देशों में बेचती हैं। 50% शुल्क लगने के बाद खिलौना, फुटवियर जैसे सेक्टर में निवेश की इच्छुक कंपनियों ने हाथ खींच लिए थे। अमेरिका दुनिया का सबसे बड़ा आयातक देश है और वहां की जीडीपी में मैन्युफैक्चरिंग की हिस्सेदारी सिर्फ 9 % है । अमेरिका के बाजार में भारत का टेक्सटाइल का निर्यात 10.5 अरब डॉलर का है। वैश्विक परिदृश्य में भारत - अमेरिका एक दूसरे के पूरक और जरूरत दोनों हैं। भारत विश्व की सबसे बड़ी आबादी वाला देश और तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर तीव्र गति से अग्रसर है , जो की अमेरिकी औद्योगिक विकास और बाजार के लिहाज़ से उपयुक्त है। भारत को भी अमेरिका की विकसित प्रौद्योगिकी और विज्ञान की आवश्यकता है, जो भारत के विकास में सहायक होगा। भारत को अमेरिकी रक्षा प्रौद्योगिकी की भी आवश्यकता है जिससे भारत को अपने सैन्य विकास में सहायता मिलेगी। भारत जिसे अपने सैन्य विकास के लिए सेमीकंडक्टर की पूर्ति एवं तेजस का इंजन, अपाचे हेलिकॉप्टर एवं अन्य के लिए अमेरिकी मदद की जरूरत है।

विगत वर्षो में भारत ने रक्षा सामग्री के उत्पादन के लिए समग्र इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार किया है। स्वदेशी क्षमता में वृद्धि के बावजूद भारत को अभी भी बहुत बड़ी मात्रा में उत्कृष्ट उपकरणों के लिए विदेशों से आयातित उपकरणों पर आश्रित होना पड़ता है। विदेशों की प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के बावजूद भारतीय प्रौद्योगिकी का विकास एक सीमित दायरे तक ही हो पा रहा है। पिछले दो दशकों में भारत और अमेरिका के बीच संबंध प्रगाढ़ हुए हैं और अमेरिका भारत को अपना "अहम रक्षा साझीदार" कहता है। इन दशकों में भारत और अमेरिका के मध्य कई द्विपक्षीय समझौते हुए जिससे रक्षा के क्षेत्र में सहयोग के साथ-साथ तकनीकी और प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण जैसे समझौते शामिल हैं। यह भारत के लिए अवसर है जिससे भारत अपनी तकनीकी उन्नति और प्रौद्योगिकी विकास को नई ऊंचाईयों पर ले जा सकता है। भारत के लिए अमेरिका एक विशाल उच्च क्रय-शक्ति वाला बाजार है। भारत विशेष रूप से निम्न क्षेत्रों से निर्यात बढ़ाने का इच्छुक है - औषधि एवं फार्मास्यूटिकल उत्पाद, आईटी सेवाएं और डिजिटल समाधान, वस्त्र एवं परिधान , रत्न एवं आभूषण, इंजीनियरिंग उत्पाद। भारतीय नीति निर्माताओं का उद्देश्य अमेरिकी बाजार में टैरिफ में कमी के माध्यम से भारतीय उत्पादों की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाना है। COVID-19 के बाद वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के पुनर्गठन के दौरान भारत स्वयं को चीन के विकल्प के रूप में स्थापित करना चाहता है। अमेरिका के साथ गहरे

व्यापारिक संबंध इस रणनीति को मजबूती प्रदान करते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका लंबे समय से भारत के साथ व्यापार घाटे को लेकर चिंतित रहा है। अमेरिका का तर्क है कि भारत का उच्च टैरिफ ढांचा और गैर-टैरिफ बाधाएं अमेरिकी उत्पादों की प्रतिस्पर्धा को सीमित करती हैं। अमेरिका चाहता है कि भारतीय बाजार में कृषि और डेयरी उत्पादों के लिए अधिक पहुँच , औद्योगिक उत्पादों पर शुल्क में कटौती , डिजिटल व्यापार और डेटा प्रवाह में खुलापन हो। अमेरिका भारत को LNG, कच्चा तेल, रक्षा उपकरण, विमानन उत्पाद का बड़ा आयातक बनाना चाहता है इससे अमेरिकी उद्योगों को निर्यात विस्तार का अवसर मिलता है और रणनीतिक साझेदारी भी मजबूत होती है। भारत का निर्यात मुख्यतः श्रम - प्रधान और सेवा - आधारित है , जबकि अमेरिका उच्च तकनीकी और पूंजी - प्रधान वस्तुओं का निर्यात करता है। यह संरचनात्मक अंतर व्यापार संतुलन को प्रभावित करता है। भारत का औसत आयात शुल्क (15-16%) अमेरिका (2-3%) की तुलना में अधिक है। कृषि, डेयरी और ऑटोमोबाइल जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में भारत संरक्षणवादी रुख अपनाता है। अमेरिका भी एंटी - डंपिंग शुल्क और गुणवत्ता मानकों के माध्यम से बाधाएँ लगाता है। दोनों देशों के घरेलू राजनीतिक दबाव व्यापार नीति को प्रभावित करते हैं , भारत में किसान और लघु उद्योग समूह आयात उदारीकरण का विरोध करते हैं। अमेरिका में घरेलू उद्योग और श्रमिक संघ व्यापार घाटे को राजनीतिक मुद्दा बनाते हैं। भारत अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखना चाहता है, जबकि अमेरिका व्यापार को व्यापक भू - राजनीतिक सहयोग से जोड़कर देखता है। यह दृष्टिकोणों का अंतर वार्ता को कठिन बनाता है।

3. 2026 के भारत - अमेरिका व्यापार डील के प्रमुख तथ्य:

साझा बयान जारी होते ही रूस से तेल खरीदने के कारण अमेरिका की तरफ से जुर्माने के रूप में लगाया गया 25% शुल्क समाप्त हो जाएगा , बाकी का 25% टैरिफ पारस्परिक शुल्क के रुप में भारत पर लगा रखा है। मार्च मध्य में अंतिम हस्ताक्षर होने के बाद इस 25% को भी घटाकर 18% कर दिया जाएगा। भारत भी अमेरिका के लिए अपने शुल्क में कमी मार्च में होने वाले अंतिम हस्ताक्षर के बाद करेगा। अमेरिका से हुए व्यापार समझौते में प्रमुख फसलों और डेयरी को शामिलइस्तेमाल नहीं किया गया है। गेहूँ - चावल व अन्य अनाज के साथ तिलहन, आलू, मसाला, लहसुन, मक्का, सोयाबीन, आटा के साथ सभी प्रकार के फूल - पत्ती से जुड़े उत्पाद को समझौते के दायरे से बाहर रखा गया है। ईंधन में इस्तेमाल होने वाले एथेनॉल को भी शामिल नहीं किया गया है। अंतरिम व्यापार समझौते से भारतीय निर्यातकों, विशेषकर, एमएसएमई, किसानों, और मछुआरों, के लिए अमेरिकी बाज़ार खुल जाएगा । टेक्सटाइल पर 18% शुल्क होने से अमेरिका को हमारा निर्यात दोगुना हो सकता है। भारत ने अगले पांच वर्षों में अमेरिका से 500 अरब डॉलर के ऊर्जा उत्पाद, विमान और विमान के पुर्जे, बहुमूल्य धातुएं और कोयला खरीदने पर सहमति जताई है। कपड़ा, चर्म उद्योग, प्लास्टिक और रबर उत्पाद, हस्तशिल्प उत्पाद और चुनिंदा मशीनरी को विशाल बाज़ार मिलेगा। भारत अमेरिकी अल्कोहल पर चरणबद्ध तरीके से शुल्क कम करेगा। भारत अमेरिका के औद्योगिक वस्तुओं और पशु चारे के लिए लाल ज्वार, ताजे भौर प्रसंस्कृत फल पर शुल्क समाप्त या कम करेगा। अमेरिका और भारत द्विपक्षीय व्यापार को प्रभावित करने वाली गैर-टैरिफ बाधाओं का समाधान करेंगे।

4. समझौते का क्रियान्वन और कानूनी ढाँचा

व्यापार समझौते के बाद भारत अब उन देशों में शामिल हो गया है जिन पर ट्रंप प्रशासन ने सबसे कम टैरिफ लगाए हैं। भारत पर टैरिफ चीन, पाकिस्तान, इंडोनेशिया, बांग्लादेश और वियतनाम जैसी अन्य एशियाई अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में काफी कम है।

भारतीय सामानों पर अमेरिकी टैरिफ उसके सबसे करीबी सहयोगियों पर लगाए गए टैरिफ के करीब है। उनमें ब्रिटेन (10%), ईयू (15%), स्विट्जरलैंड (15%) जापान (15%) और दक्षिण कोरिया (15%) शामिल हैं।भारत ने अमेरिका से आयातित उद्योग और कृषि उत्पादों पर अपने शुल्क को घटाने या हटाने पर सहमति जताई है - इसमें DDGs, सोयाबीन तेल, फल फ्लावर उत्पाद इत्यादि आते हैं। अमेरिका ने भारत से होने वाले निर्यात पर सामान्य शुल्क को लगभग 18% तय किया है - इससे पहले भारत के उत्पादों पर 50% तक शुल्क लगा था। कुछ विशेष भारतीय वस्तुओं (जैसे - दवाइयों ,रत्न आभूषण, विमान भाग) पर भविष्य में शून्य टैरिफ की संभावनाएं तक की जा रही हैं। दोनों देश नियम ,मानक और परीक्षण प्रक्रियाओं को सरल बनाने पर बातचीत करेंगे ताकि तकनीकी और गुणवत्ता जांच की वजह से व्यापार में रोड़े न खड़े हों। अगर किसी पक्ष ने भविष्य में टैरिफ बदलने का निर्णय लिया ,तो दूसरा पक्ष भी अपनी प्रतिबद्धताओं को संशोधित कर सकता है - इससे ढांचे में लचीलापन आता है। दोनों देश साझा करेंगे निवेश समीक्षा ,निर्यात नियंत्रण और आर्थिक सुरक्षा के मुद्दों पर जानकारी ताकि वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत किया जा सके।भारत और अमेरिका, दोनों World Trade Organization (WTO) के सदस्य हैं, इसलिए उनके बीच होने वाला कोई भी व्यापार समझौता WTO के नियमों के अनुरूप होना आवश्यक होगा। इस संदर्भ में Most Favoured Nation (MFN) और National Treatment जैसे सिद्धांत लागू होंगे, जो यह सुनिश्चित करते हैं कि दोनों देश एक-दूसरे के साथ भेदभावपूर्ण व्यापार नीति न अपनाएँ। यदि दोनों देशों के बीच Free Trade Agreement (FTA) होता है, तो उसे WTO के Article XXIV of GATT के तहत वैधता प्राप्त होगी, जो क्षेत्रीय व्यापार समझौतों को अनुमति देता है। 2026 में प्रस्तावित भारत-अमेरिका व्यापार समझौता तीन संभावित रूपों में सामने आ सकता है—Limited Trade Deal (Mini Trade Deal), Comprehensive Economic Partnership Agreement (CEPA), या एक व्यापक Free Trade Agreement (FTA)। इस समझौते का कानूनी ढांचा कई महत्वपूर्ण तत्वों को शामिल करेगा, जैसे कि टैरिफ में कमी की समयसीमा (Tariff Reduction Schedules), Rules of Origin (उत्पत्ति के नियम), Sanitary and Phytosanitary (SPS) Measures, और Technical Barriers to Trade (TBT)। साथ ही, इसे दोनों देशों के घरेलू कानूनों के साथ समन्वित करना होगा। भारत में यह प्रक्रिया Directorate General of Foreign Trade (DGFT) और कस्टम्स एक्ट, 1962 के माध्यम से संचालित होगी, जबकि अमेरिका में Office of the United States Trade Representative (USTR) और US Trade Act के तहत आवश्यक संशोधन किए जाएंगे। इस समझौते का क्रियान्वयन चरणबद्ध तरीके से किया जाएगा, जिसमें टैरिफ कटौती 5 से 10 वर्षों के भीतर लागू की जाएगी। संवेदनशील क्षेत्रों, विशेष रूप से कृषि, में परिवर्तन धीरे-धीरे किए जाएंगे ताकि घरेलू उद्योगों पर अचानक प्रभाव न पड़े। इसके अतिरिक्त, समझौते के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए एक मजबूत संस्थागत ढांचा तैयार किया जाएगा, जिसमें Joint Trade Committee, Sectoral Working Groups, और Monitoring & Review Mechanism जैसे निकाय शामिल होंगे।निगरानी और समीक्षा के लिए नियमित वार्षिक बैठकें आयोजित की जाएंगी, जिनमें व्यापार संतुलन, आर्थिक प्रभाव और अन्य पहलुओं का मूल्यांकन किया जाएगा। आवश्यकता पड़ने पर समझौते में संशोधन करने के लिए Review Clause भी शामिल होगा। अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए कस्टम्स सहयोग (Customs cooperation), डेटा साझा करना (Data sharing), और पारदर्शिता पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। इसके साथ ही, डिजिटल और सेवा क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण प्रावधान होंगे, जिनमें ई-कॉमर्स नियम, डेटा लोकलाइजेशन बनाम डेटा के मुक्त प्रवाह, तथा आईटी और सेवा क्षेत्र में बाजार पहुंच से संबंधित नीतियाँ शामिल होंगी। इस प्रकार, यह समझौता न केवल व्यापार को बढ़ावा देगा, बल्कि दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग को भी नई दिशा प्रदान

5. भारत के लिए सकारात्मक प्रभाव

ट्रंप की कुख्यात 'द आर्ट ऑफ द डील' रणनीति, ट्रंप की सौदेबाजी बेहद आक्रामक दबाव वाली और अतिरंजित दावों घर आधारित रही है। कनाडा, यूरोप, जापान और दक्षिण कोरिया जैसे अमेरिका के सहयोगी भी उनकी इस शैली के सामने अक्सर रक्षात्मक स्थित में दिखे। स्वयं भारत ट्रंप के पहले कार्यकाल में एक सीमित व्यापार समझौते की कोशिश में विफल रहा, लेकिन इस बार भारत ने न तो जल्दबाजी दिखाया और न ही आत्मसमर्पण किया। भारत ने ट्रंप को वह राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक संतुष्टि की गुंजाइश दी ,जिसके लिए अमेरिकी राष्ट्रपति व्यग्र थे। लेकिन वास्तविक लाभ भारत के खाते में गया।आज भारत से व्यापार करने के विषय विश्व के अलग -2 देश मुक्त व्यापार समझौता कर रहे हैं, जैसे - भारत-अफ्रीकी संघ, भारत-इयू , भारत-ओमान, भारत -U.A.E. आदि। यह समझौता विशेष रूप से श्रम प्रधान क्षेत्रों के लिए लाभकारी है:- कपड़ा और परिधान - टैरिफ कम होने से वियतनाम और बांग्लादेश जैसे प्रतिस्पर्धियों के मुकाबले भारत की स्थिति मजबूत हुई है।

फार्मास्यूटिकल्स - अमेरिका भारतीय जेनेरिक दवाओं का सबसे बड़ा बाजार है, कम टैरिफ से निर्यात में भारी वृद्धि की संभावना है, इंजीनियरिंग और मशीनरी निर्यात पर शुल्क 50% से घटाकर 18% होने से $477 बिलियन डॉलर के अमेरिकी बाजार तक बेहतर पहुंच मिली है। विदेशी कंपनियाँ यदि भारत में उत्पादन इकाइयां स्थापित करती हैं, तो प्रौद्योगिकी हस्तांतरण होगा, कौशल विकास को बढ़ावा मिलेगा, रोजगार सृजन होगा। टैरिफ में कमी के कारण भारत में निर्मित उत्पाद सीधे अमेरिकी बाजार को लक्षित कर सकते हैं। इससे निर्यात आधारित मैन्युफैक्चरिंग मॉडल को मजबूती मिलेगी और MSME क्षेत्र को अंतरराष्ट्रीय आपूर्ति श्रृंखला से जुड़ने का अवसर मिलेगा।

6. भविष्य की संभावनाएँ और रणनीतिक परिणाम

भारत और अमेरिका के बीच 2026 का व्यापार ढांचा केवल आर्थिक समझौता नहीं है, यह आने वाले दशक की रणनीतिक दिशा का संकेत भी है। इसके परिणामस्वरूप आर्थिक, भू-राजनीतिक और संस्थागत परिवर्तन आने की संभावनाएँ हैं। यह अंतरिम ढ़ांचा भविष्य में एक पूर्ण द्विपक्षीय समझौते के रूप में परिवर्तित हो सकता है, यदि वार्ताएँ सफल रहीं तो टैरिफ में कमी (0-5% तक चयनित क्षेत्रों में), सेवाओं और डिजिटल व्यापार का समावेश, निवेश संरक्षण समझौता, विवाद समाधान तंत्र की स्पष्टता हो सकती है। संभावना है कि अगले 3-5 वर्षों में यह समझौता 200-250 अरब डॉलर के वार्षिक द्विपक्षीय व्यापार को पार कर सकता है।COVID-19 और भू-राजनीतिक तनावों के बाद “China+1” रणनीति उभरी है, इस संदर्भ में इलेक्ट्रॉनिक्स, सेमी कंडक्टर असेंबली, रक्षा विनिर्माण, हरित ऊर्जा उपकरण इन क्षेत्रों में भारत को वैकल्पिक उत्पादन केन्द्र के रूप में विकसित किया जा सकता है। यदि अमेरिकी कंपनियाँ भारत में उत्पादन करती हैं, तो भारत का विनिर्माण योगदान GDP में वर्तमान 17% से बढ़कर 22-25% तक पहुँच सकता है। व्यापार समझौते के बाद रणनीतिक

सहयोग गहरा हो सकता है। रक्षा सह -उत्पादन, साइबर सुरक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और क्वांटम तकनीक, स्वच्छ ऊर्जा अनुसंधान यह आर्थिक सहयोग को सुरक्षा साझेदारी से जोड़ता है, जिससे हिन्द प्रशांत क्षेत्र में संतुलन मजबूत हो सकता है। हालांकि अवसर बड़े हैं, परंतु भारत को सावधानी भी रखनी होगी कि किसी एक बाजार पर अत्यधिक निर्भरता से बचना, बहुध्रुवीय विदेश नीति संतुलन बनाए रखना, घरेलू उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को मजबूत करना। रणनीतिक परिणाम इस बात पर निर्भर करेंगे कि

भारत आर्थिक साझेदारी और नीति स्वायत्तता के बीच संतुलन कैसे बनाए रखता है।यह समझौता भारत को चीन के विकल्प के रूप में एक विश्वसनीय आपूर्ति श्रृंखला भागीदार (Reliable Supply chain Partner) के रूप में स्थापित करता है।हालिया समझौतों के कारण रेटिंग एजेंसियों ने भारत के आर्थिक दृष्टिकोण को 'स्थिर' बताया है जैसे - care edge global ratings (11 Feb 2026) BBB+ ,ICRA ने नेगेटिव से बदलकर stable एवं Moodys और S & P global ratings ने भी अच्छी रेटिंग दी है।

7. निष्कर्ष

हर बड़े व्यापार समझौते की तरह 2026 का भारत - अमेरिका व्यापार ढांचा भी बहस और मतभेदों से घिरा हुआ है। जहां समर्थक इसे आर्थिक अवसर मानते हैं, वहीं आलोचक इसके दीर्घकालिक प्रभावों पर प्रश्न उठाते हैं। सबसे तीखी आलोचना कृषि और डेयरी क्षेत्र से है, अमेरिका बड़े पैमाने पर, अत्यधिक सब्सिडी आधारित कृषि उत्पादन करता है। यदि भारतीय बाजार अमेरिकी कृषि उत्पादों के लिए अधिक खुलता है, तो छोटे और सीमांत किसानों की आय प्रभावित हो सकती है, घरेलू मूल्य स्तर में गिरावट आ सकती है, ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर दबाव बढ़ सकता है। भारत में औसत जोत आकार लगभग 1-1.5 हेक्टेयर है, जबकि अमेरिका में यह 170 हेक्टेयर से अधिक है, यह संरचनात्मक अंतर प्रतिस्पर्धा को असमान बनाता है । अमेरिका और भारत के बीच व्यापार में लंबे समय से संरचनात्मक अंतर रहा है।

अमेरिका उच्च मूल्य-वर्धित तकनीकी उत्पाद निर्यात करता है, जबकि भारत अधिकतर श्रम-प्रधान एवं सेवा आधारित उत्पाद निर्यात करता है। आलोचकों का मत है कि आयात बढ़ते हैं और घरेलू विनिर्माण पर्याप्त रूप से सशक्त नहीं होता, तो व्यापार असंतुलन और बढ़ सकता है। ऊर्जा, रक्षा उपकरण और उन्नत तकनीकी आयात में वृद्धि से दीर्घकाल में आयात बिल बढ़ सकता है। 'मेक इन इंडिया' का उद्देश्य भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनाना है, आलोचकों का तर्क है कि यदि आयात उदारीकरण तेजी से किया गया, तो घरेलू उद्योगों को प्रतिस्पर्धात्मक झटका लग सकता है, विनिर्माण क्षेत्र में आत्मनिर्भरता का लक्ष्य कमजोर पड़ सकता है। MSME क्षेत्र को उच्च गुणवत्ता और कम आयात वाली अमेरिकी वस्तुओं से मुकाबला करना कठिन हो सकता है, हालांकि समर्थक इसे तकनीकी उन्नयन का अवसर मानते हैं, लेकिन आलोचक सावधानीपूर्वक चरणबद्ध उदारीकरण की वकालत करते हैं।कुछ विश्लेषकों का तर्क है कि बड़े पैमान पर ऊर्जा और रक्षा खरीद प्रतिबद्धताओं से भारत की रणनीतिक स्वतंत्रता प्रभावित हो सकती है, उनका प्रश्न है, क्या व्यापार समझौता भू-राजनीतिक दबाव का परिणाम है? और क्या यह बहुध्रुवीय विदेश नीति संतुलन को प्रभावित करेगा? अमेरिका अक्सर व्यापार समझौतों में श्रम अधिकार और पर्यावरण मानकों को शामिल करता है, आलोचकों का मानना है , कि कठोर मानक भारतीय निर्यातकों की लागत बढ़ा सकते हैं तथा छोटे उद्योगों के लिए अनुपालन महंगा साबित हो सकता है। इनके अलावा अंतरिम ढांचा पूर्ण कानूनी बाध्यता वाला नहीं है, राजनीतिक परिवर्तन से नीतियाँ बदल सकती हैं, विवाद समाधान तंत्र की स्पष्टता आवश्यक है। अतीत में भी व्यापार वार्ताएँ कई बार असफल चुकी हैं, इसलिए नीति स्थिरता पर प्रश्न उठाए जाते हैं।

भारत - अमेरिका व्यापार समझौता 2026 केवल एक व्यापारिक सौदा नहीं है, बल्कि यह एक रणनीतिक पुनर्गठन है। हालांकि अमेरिका से आयात बढ़ने पर व्यापार अधिशेष कम होने की चिंता है, लेकिन तकनीकी और ऊर्जा सुरक्षा के मामले में भारत को दीर्घ-कालिक लाभ होने की प्रबल संभावना है। भविष्य की संभावनाएं आशाजनक हैं, परंतु परिणाम स्वतः नहीं मिलेंगे ।

संरचनात्मक सुधार, लॉजिस्टिक दक्षता, तकनीकी निवेश, नीति स्थिरता, इन तत्वों पर निर्भर करेगा कि 2026 का समझौता केवल एक राजनीतिक घोषणा बनकर रह जाता है या भारत-अमेरिका संबंधों को नई आर्थिक ऊंचाइयों तक ले जाता है।

9.स्रोत

किताब

- Arvind Panagariya, A. (2008). India: The emerging giant. Oxford University Press
- S. Jaishankar, एस. (2020). द इंडिया वे: अनिश्चित विश्व के लिए रणनीतियाँ (The India Way: Strategies for an Uncertain World). हार्परकोलिन्स इंडिया

समाचार पत्र

- दैनिक भास्कर. (2025, 12 जनवरी). भारत–अमेरिका व्यापार समझौते पर वार्ता तेज.
- दैनिक जागरण. (2025, 18 फरवरी). भारत–अमेरिका व्यापार संबंधों में नई संभावनाएँ.
- हिन्दुस्तान. (2025, 5 अप्रैल). भारत–अमेरिका व्यापार वार्ता: प्रमुख मुद्दे और चुनौतियाँ.
- नवभारत टाइम्स. (2025, 20 मई). मेक इन इंडिया और अमेरिका के साथ व्यापार समझौता.
- The Hindu. (2025, January 15). India–US trade talks gain momentum amid tariff concerns.
- The Indian Express. (2025, March 10). Key issues in India–US bilateral trade negotiations.
- The Economic Times. (2025, April 22). India–US mini trade deal: Opportunities and challenges.
- Business Standard. (2025, May 5). Tariff disputes and trade balance between India and the US.

रिपोर्ट

- World Trade Organization. (2023). World trade report 2023. WTO. https://www.wto.org
- Office of the United States Trade Representative. (2024). U.S.-India trade policy agenda and annual report. https://ustr.gov

- Ministry of Commerce and Industry India. (2024). India's foreign trade policy. Government of India. https://commerce.gov.in

- International Monetary Fund. (2024). Direction of trade statistics. https://imf.org